पंजीयन संख्या / RNI/TELHIN/2016/70799 ISSN 2456-9445
खंड-2, अंक-3, आषाढ़-भाद्रपद 2075 / जुलाई-सितम्बर 2018

# समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

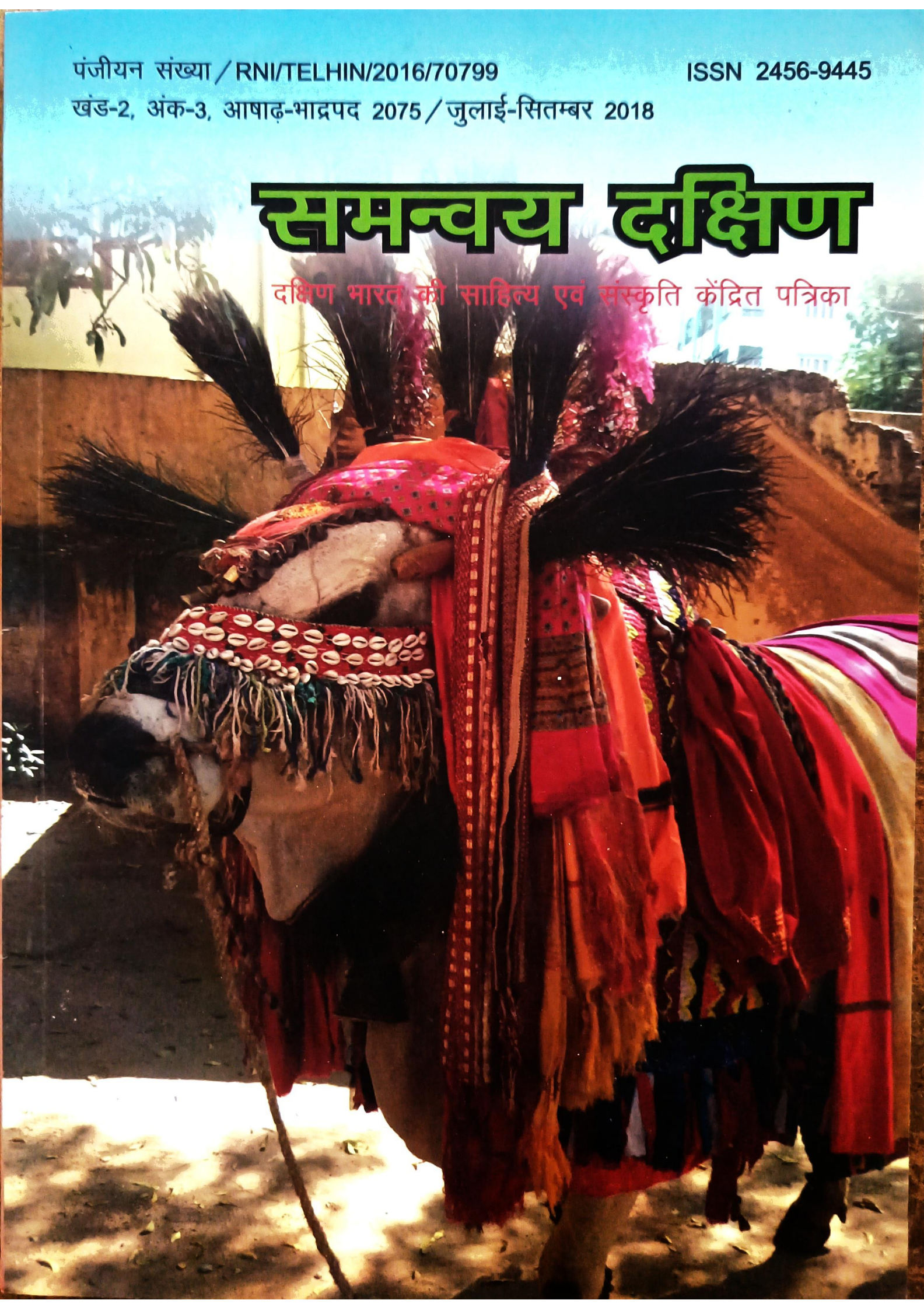

# अनुक्रम

## भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज


संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से : प्रो.नन्द किशोर पाण्डेय

आलेख

1. तेलुगु कविता में 'राष्ट्रीय चेतना' : डॉ.एम.पवन कुमारी 15

2. मानवीय मूल्यों के चितेरे : पापीनेनी शिवशंकर : डॉ.विनीता सिन्हा 19

3. पोर्ट सैंट जॉर्ज कॉलेज और तेलुगु भाषा की नवचेतना : डॉ.विजयराघव रेड्डी 25

4. नौवें दशक की हिंदी और तेलुगु कहानी की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ.नीला गंगराजु 30

5. आंध्र कविता पितामह : अल्लसानि पेद्दना का काव्य वैभव : डॉ.भागवतुला हेमलता 35

6. आत्मोन्नति के शिखर पर 'एन्टे कथा' : डॉ.प्रत्युषा एस.नायर 42

7. केरल का रंगमंच : डॉ.के.एन.अनीश 47

8. 21 वीं सदी के कन्नड़ नुक्कड़ नाटक : एक अध्ययन : डॉ.प्रभा वि.भट् 51

9. तेलुगु साहित्य-विश्वमानव गुर्रम जाषुवा : डॉ.अरुण हेरेमत 56

10. कोरजा और आकाशभूमिकलुडे ताक्कोल के बीच तुलनात्मक अध्ययन : डॉ.एस.आर.श्रीकला 59

11. कन्नड़ के जनकवि सर्वज्ञमूर्ति

# तेलुगु साहित्य-विश्वमानव गुर्रम जाषुवा

**डॉ.अरुण हेरेमत**

नवयुग कवि कळापूर्ण, पद्मभूषण, कवि कोकिला श्री गुर्रम जाषुवा का जन्म सन् 1895, सितंबर 28 को गुर्रम वीरय्या, लिंगम्मा के घर में हुआ। वीरय्या और लिंगम्मा दोनों की शादी अंतरजातीय होने के कारण जाति बहिष्कार का शिकार होना पड़ा। फिर भी इन दंपतियों ने धैर्य के साथ आगे बढ़ा और सारी मानव जाति एक ही है कहकर प्रमाणित किया। परंतु उन को जाति प्रमुखों ने अपने समुदाय से अलग कर दिया। इसके कारण इन दंपतियों ने ईसाई धर्म अपनाया। वीरय्या ने बाइबिल पढ़कर, मत प्रबोधक के रूप में जीवन यापन शुरू किया। इस तरह के माहौल में श्री जाषुवा का जन्म हुआ। यहाँ जाषुवा नाम के बारे में दो बातें कहना जरूरी है। यह हिब्रु भाषा का शब्द है। तेलुगु बाइबिल में जाषुवा शब्द यहोषुवा के रूप में अनूदित है। यहोषुवा का अर्थ है 'खुद ही भगवान'। उसकी छत्रछाया किस को मिलती है, वह 'जाषुवा'। इसलिए लिंगम्मा और वीरय्या ने अपने बेटे को 'जाषुवा' नामकरण किया। इसके साथ-साथ उसे बापटिज़म का ही मुहर लगवाया।

श्री जाषुवा ने अष्टावधान और शतावधान करना शुरू किया। लेकिन आगे बढ़ नहीं पाने के कारण उसे छोड़कर जाषुवा ने नत्रावधान की ओर ध्यान दिया। अष्टावधान और शतावधान में मौखिक भाषा का प्रयोग होता है तो नेत्रावधान में अक्षर के अनुसार आँख घुमाते थे। सामनेवाले व्यक्ति उनके आँखों की पुतली के भ्रमण के अनुसार अक्षर लिखकर बताता था। इस प्रकार पद्य के सारे अक्षरों को सूचित करते थे। संयुक्त और द्वित्वाक्षर के लिए बहुत मुश्किल होता था। नेत्रावधान ही बहुत कठिन काम है। फिर भी जाषुवा ने अपने छोटे भाई के साथ मिलकर सफलतापूर्वक प्रदर्शित करते थे।

जाषुवा ने तेलुगु साहित्य क्षेत्र के तत्कालीन समाज के बड़े-बड़े कवियों के साथ परिचय बढ़ाया। अपनी कविता यात्रा को जारी रखा। उनमें तोलेटि सुब्बाराव, सत्यवोलु गुन्नेश्वर राव, कंदुकूरि वीरेश लिंगम् पंतुलु, समाज सुधारक श्री चिलकमूर्ति लक्ष्मी नरसिंहम् प्रमुख हैं। इन साहित्यिक क्षेत्र के दिग्गजों के अलावा सामाजिक और राजनैतिक प्रमुख व्यक्तियों से भी परिचय हुआ। बेजवाडा रामचंद्र रेड्डी, वेंकटगिरी संस्थानाधीन श्री याचेंद्रभूपति आदि से मुलाकात हुई। इस प्रकार जाषुवा के साहित्यिक और सामाजिक जीवन आगे बढ़ा। तत्कालीन समाज में स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था। देश भक्ति की रचनाएँ होती थीं। कवि जाषुवा ने भी अपनी रचनाओं में शांति और अहिंसा का प्रबोध करने लगे। प्रमुख देश भक्त कोंडा वेंकटप्पय्या, उन्नव लक्ष्मी नारायण, आंध्र केसरी टंगूटूरि प्रकाशम् पंतुलु, बलिजेपल्लि लक्ष्मीकांत कवि आदि अपनी देश भक्ति को रचनाओं और कविताओं के द्वारा व्यक्त करने लगे।

**रचना संसार :**

श्री जाषुवा का रचना संसार विशाल और व्यापक है। उन्होंने तेलुगु साहित्य को अनेक खंड काव्य और लंबी कविताओं द्वारा समृद्ध बनाया। कवि जाषुवा की

तेलुगु साहित्य के आधुनिक कवियों में श्री जाषुवा का महत्वपूर्ण स्थान है। निम्न जाति में जन्म लेने से भी उदात्त भावनाओं के साथ रचनाएँ करते थे। जीवन में अनेक सुख दुखों को झेला। एक जगह श्री जाषुवा कहते हैं कि 'सुकवुलेंदुन् मंद भाग्युल गदा!' (अर्थात् अच्छे कवि कम भाग्यशाली होते हैं) समाज में यह लोकोक्ति चलती है कि लक्ष्मी और सरस्वती सास-बहु हैं। दोनों एक जगह नहीं रहतीं। अतः श्री जाषुवा पर शारदा देवी की कृपा दृष्टि है, परंतु लक्ष्मी की कृपा दृष्टि प्राप्त नहीं कर सके।

जाषुवा कहते थे कि जीवन ने ही मुझे कितने पाठ पढ़ाये। मेरे दो गुरु हैं-वे हैं-गरीबी और जाति भेद तथा मतभेद। एक ने मुझे साहस प्रदान किया तो दूसरे ने मुझे सामना करने की शक्ति प्रदान कर गिरिमिटिया बनने नहीं दिया। गरीबी और मतभेद को छोड़कर मैं मानव के रूप में निरूपित कर सका। मैंने उन पर औजार चलाया। मेरा औजार है कविता। मेरे औजार को समाज के प्रति द्वेष नहीं है, उसकी पद्धति पर घृणा है।

जाषुवा अपने व्यक्तित्व के बारे में इस प्रकार लिखते हैं। चैतन्य युक्त कविता को प्रस्तुत किया।

**"निवसिंचुटकुचिन्नि निलय मोक्कटि दक्क**
**गडन सेयुट कास पडनु नेनु**
**आलुबिड्डलुकु ना यास्ति पास्तुलु तप्प, पेडत्रोवलो पाद मिडनु नेनु।**
**नेनाचरिंपनि नीतुलु बंधिंचि**
**रानि रागमु तीयलेनु नेनु**
**संसार यात्रकु चालिनंतकु मिंचि**
**गुड्डि गव्वयु कोरु कोननु नेनु**
**कुलमतालु गीचुकोन्न गीतलु जोच्चि**
**पंजराना गडट् वडनु नेनु**
**निखिल लोक मेट्लु निर्णयिंचिना नाकु**
**तरुगु लेदु, विश्वनरुडनुनेनु।।"**

श्री जाषुवा ने कभी एकपक्षीय व्यवहार नहीं किया। विश्व मानवता की दृष्टि से सबकी भलाई चाहते थे।

**संदर्भ सूची :**


1. सहस्र वर्षों का तेलुगु साहित्य (सं.), प्रो.वाई.लक्ष्मी प्रसाद, आंध्र प्रदेश हिंदी आकादमी, हैदराबाद।
2. तेलुगु मणिदीपालु (प्रतिभामूर्तुल जीवित चित्रालु), एमेस्को (कृष्णा जिला लेखक संघ) (सं.) मंडलिबुद्ध प्रसाद, विजयवाडा
3. तेलुगु साहित्य : एक अवलोकन, जी.नीरजा, आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद।



**संपर्क सूत्र : विभाग अध्यक्षा, एल.वी.डी.कॉलेज, रायपूर, कर्नाटक राज्य,**
**दूरभाष-8277622133**

गब्बिलम् खंड काव्य (1941, चमगीदड) चर्चित काव्य है। गब्बिलम लेखक के रूप में साहित्य संसार में चर्चित कवि हैं। खासकर आंध्र प्रांत में विख्यात कवि हैं। श्री जाषुवा के खंड काव्य और लंबी कविताओं को हम इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं।

जाषुवा की रचनाओं में प्रगतिशील भावनाएँ भरी पड़ी दिखाई देती हैं। छुआछूत के विरोध में जाषुवा ने समाज की विसंगतियों को पहचान कर प्रश्न किया। जातिभेद, मतभेद, मानव-मानव के बीच दीवार के रूप में खड़े हैं। जाति व्यवस्था का खंडन किया गया। छुआछूत अंत करने का कोई मार्ग नहीं है सोचकर दुःखी होते थे। व्यक्तियों के बीच अंतर नहीं होना चाहिए। सब समान हैं सभी भारत माता की संतान हैं।

श्री जाषुवा अन्य प्राणियों को भी जीव कारुण्य दृष्टि से देखते थे। हर छोटी-छोटी प्राणी पर भी दया दिखाते थे। अपने घर की कुत्ता, मकड़ी, जुगुनू, चींटी आदि छोटे जीवों पर भी कविता लिखकर यह प्रमाणित किया कि कोई भी चीज़ कविता लिखने के लिए अनर्ह नहीं है। इस प्रकार बुद्ध और गांधी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा सूत्रों को अपनी कविता द्वारा प्रकट करते थे।

**"पंच भूतात्मकंबैन प्रकृति सुखमु**
**ननुभविंचेडु हक्कु मर्त्युनके कादु।**
**कलदु प्रति चिन्नि प्राणि (भष्तुलकु) कूडा**
**कलमु गलदंचु दोपिडी सलुपदागदु।।"**

अर्थात् प्रकृति सुख का आस्वाद करने का अधिकार हर छोटी बड़ी प्राणी को है। सिर्फ मानव तक सीमित नहीं है। बलवान हूँ ऐसा सोचकर दूसरे को लूटना नहीं चाहिए। इस प्रकार जाषुवा ने अपनी कविता को करुण रस से भी ओतप्रोत किया। अन्याय के विरुद्ध आवाज़ भी उठाया।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में ही उन्होंने 'गब्बिलम्' काव्य की रचना की। यह लघु काव्य जाषुवा के काव्यों में अद्भुत रचना है। यह खंड काव्य कालिदास कृत 'मेघदूतम्' (मेघदूत) की पैरोडी है। कालिदास ने 'मेघदूत' काव्य में मेघ को दूत बनाकर प्रेयसी के पास संदेशा भेजने का चित्रण किया। यह एक यक्ष की कहानी है। यक्ष मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रेयसी के पास संदेशा भेजता है। 'गब्बिलम' काव्य में एक मोची को कथा नायक बनाने का साहस किया। दूसरी विशेषता है कि संदेशा के साधन के रूप में चमगादड़ को चुनना। कथानायक चमगादड़ से निवेदन करता है कि शिव मंदिर में जब पंडित जी नहीं रहेगा, तब शिव को यह प्रार्थना सुना दो कि पीड़ितों, गरीबों के अस्त-व्यस्त जीवन की परिस्थितियाँ और उनके मुश्किलों को सुना दो। कहानी दक्षिण भारत से शुरू होकर कैलाश तक चलती है। जब चमगादड़ कैलाश से वापस आता है, तब कुछ सुखद घटनाएँ घटती हैं। फिर भी अनेक सामाजिक भेदभाव तथा कठिनाइयाँ ऐसे ही रहने के कारण कथानायक असंतुष्ट और आक्रोश रहता है। इसके साथ कहानी का अंत होता है। 'गब्बिलम' काव्य में श्री जाषुवा ने संदेश भेजने वाले के रूप में एक पीड़ित को लिया, जो गरीबी और भूख से तड़प रहा है।

**जाषुवा का व्यक्तित्व और लक्ष्य :**

# संस्थान प्रकाशन

मुद्रक कर्षक प्रिंटर्स तथा प्रकाशक डॉ. अनीता गांगुली क्षेत्रीय निदेशक द्वारा सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पक्ष में
40A PHB,OU रोड, विद्यानगर, हैदराबाद-500044 से मुद्रण स्थल से मुद्रित तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, 2-2-12/5, डी.डी.
-500007 (तेलंगाना) प्रकाशन स्थल से प्रकाशित